भारतीय संस्कृति वैश्विक न्यास की स्थापना : प्रथम अभिनव प्रयास

(प्रैस नोट)

सम्पूर्ण विश्व सभ्यागत संकट/चुनौतियों जैसे कि कट्टरवाद, आतंकवाद, नस्लवाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, क्षेत्रीय युद्ध, अलगाववादी आन्दोलन, असमान आर्थिक विकास, स्वास्थ्य खतरे (कोविड–19), पर्यावरणीय गिरावट, समाज का विखण्डन, मूल्य प्रणालियों की हानि तथा बड़े पैमाने पर भौतिकवाद के पीछे अंधी दौड़ आदि से जूझ रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर भी वर्तमान पीढ़ी विशेषकर युवा वर्ग को भारतीय संस्कृति के सिद्धान्तों एवं भारतीय ज्ञान परम्परा की जानकारी का अभाव है। चीनी विद्वान की प्रसिद्ध कहावत **''भारत ने अपनी सीमा के पार एक भी सैनिक भेजे बिना 20 शताब्दियों तक चीन तक में भी प्रभुत्व स्थापित रखा।''** भारतीय संस्कृति के अतीत के गौरव को दर्शाती है।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद अमृतकाल में भारतीय के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रभावी नेतृत्व से वैश्विक स्तर पर सृजित इकोसिस्टम में सम्पूर्ण विश्व भारत की ओर देख रहा है। भारत में भी भारतीय ज्ञान परम्परा पर विभिन्न व्यक्तियों, संस्थानों, विश्वविद्यालयों आदि में भारतीय संस्कृति की प्राचीनता एवं ज्ञान परम्परा के सम्बन्ध में सेमिनार, वर्कशॉप, शोध–पत्र, समाचार पत्रों में लेख, यूट्यूब पर लेक्चर आदि का कार्य प्रारम्भ हुआ है। लेकिन उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति को परिभाषित करते हुए, विश्व पटल पर सृजित भ्रामक तथ्यों को दूर करते हुए एवं ठोस डिलीवरेबल्स के आधार पर भारतीय संस्कृति का कोई एकीकृत मंच नहीं है। इस कारण पिछले एक वर्ष से **प्रो. कपिल कपूर, डॉ. मनोहर शिन्दे, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, प्रो. चमनलाल गुप्ता, प्रो. जगबीर सिंह, प्रो. सुधीर कुमार, डॉ. नीरजा ए. गुप्ता, डॉ. शशिबाला, प्रो. बैद्यनाथ लाभ, डॉ. सुब्रोतो गंगोपाध्याय, प्रो. रिचा चोपड़ा, डॉ. बी.आर. मणि, प्रो. के. राजन, प्रो. हीरामन तिवारी, डॉ. संदीप मारवाह, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, डॉ. रामास्वामी सुब्रमणि, प्रो. इन्द्रनारायण सिंह, प्रो. वीर सागर जैन तथा श्री वेदवीर आर्य** सहित 200 से अधिक विद्वानों और बुद्धिजीवियों के साथ पिछले एक वर्ष में विचार–विमर्श करके, 500 से अधिक दुर्लभ पुस्तकों एवं संदर्भों को एकत्रित करके, विभिन्न सम्प्रदायों के संतों से चर्चा करके, 75 से अधिक राष्ट्रों से सम्पर्क स्थापित करके एवं 20 से अधिक देशों की यात्रा करके ''**भारतीय संस्कृति वैश्विक न्यास**'' का गठन हुआ है।

न्यास के उद्देश्य

भारतीय संस्कृति को उपभोज्य (श्रुति) प्रारूप में एकत्रित करने के लिए वैश्विक मंच; वैश्विक प्रसन्नता, स्वास्थ्य, सद्भाव, शान्ति, समृद्धि और जीव–अनुकूल इकोलॉजी को बढ़ावा देते हुए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके जन–जन तक प्रसारित करने हेतु तथा समसामयिक सभ्यता सम्बन्धी संकटों के समाधान करने के लिए डिलीवरेबल्स तैयार करना तथा बिना किसी भौगोलिक विस्तार अथवा युद्ध के भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से सहस्राब्दी पुराने वैश्विक नेतृत्व को फिर से स्थापित करना है।

भारतीय संस्कृति – एक परिदृश्य

भारतीय संस्कृति सनातन, शाश्वत तथा समावेशी है जिसमें हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और पारसी धर्म शामिल हैं तथा जिनकी जड़ें अथर्ववेद और पुरानी सिंधी संस्कृति और विभिन्न धर्म–केन्द्रित क्षेत्रीय विश्वासों एवं परम्पराओं में हैं। प्रमुख बौद्धिक पाठ जैसे वेद, उपनिषद, उपवेद, पुराण, बौद्ध त्रिपिटिका, जैन तत्वार्थ–सूत्र, तिरुक्कुरल, भगवद्गीता, दशम ग्रन्थ सहित श्री गुरु ग्रन्थ साहिब और रामायण, महाभारत, सिलप्पदिकारम, मणिमेखलाई जैसे महाकाव्य और ऐसे ही अन्य जनजातीय गोंड महाकाव्य आदि जो मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त और दर्शन प्रदान करते रहे हैं।

भारतीय संस्कृति दस सहस्राब्दियों से अधिक समय से निरन्तर अस्तित्व में है जिसने समानता, आत्मसात विविधता और स्थिरता को बढ़ावा दिया है। अपनी सार्वभौमिक उपस्थिति के साथ भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य सभी आस्था प्रणालियों और संस्कृतियों से बहुत पहले की है। आज भी इसकी वैश्विक उपस्थिति दुनिया भर के कई देशों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है और यह स्पष्ट रूप से एक शताब्दी ईसा पूर्व की अब्राहमिक संस्कृति और आस्था प्रणाली से भी बहुत पुरानी है।

भारतीय संस्कृति द्वारा प्रतिपादित चार मुख्य मान्यताएं हैं– सभी सुखी हों **(सर्वे भवन्तु सुखिनः)**, पूरी दुनिया एक परिवार है **(वसुधैव कुटुम्बकम)**, सभी को सत्य के ज्ञान का आनन्द मिले **(सत–चित–आनंद)** और आस्थाओं की विविधता को स्वीकार करना **(एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति)**।

भारतीय संस्कृति ज्ञान पर आधारित है और यह ज्ञान अनुभवजन्य, वैज्ञानिक और तार्किक है तथा यह वह ज्ञान है जो गुरुकुलम शिक्षा प्रणाली द्वारा सिखाया जाता है तथा प्रसारित किया जाता है। सन् 1832 तक भारत में ढाई लाख से अधिक गुरुकुल थे (जैसा बुड्स डिस्पैच में प्रमाणित है) अर्थात उस समय जब पश्चिमी दुनिया में शायद ही कोई स्कूल था। सदियों से भारत की शिक्षा में **दृश्य कला, प्रदर्शन कला, स्वास्थ्य विज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भाषा, साहित्य और भाषा विज्ञान, राज्य और राजनीति, सामाजिक विज्ञान, उद्योग, व्यापार, वाणिज्य, रक्षा, शिक्षा, मूर्त और अमूर्त प्रणालियाँ शामिल हैं।**

महान ऋषियों एवं विचारकों जैसे **वाल्मिकी, वेद व्यास, महात्मा बुद्ध, महावीर, वशिष्ठ, मार्कण्डेय, कपिल, भारद्वाज, सुश्रुत, चरक, जैमिनी, कणद, पाणिनि, नागार्जुन, पतंजलि, भास्कराचार्य, चाणक्य, वात्सायन, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, आदि शंकराचार्य, गुरु गोरखनाथ, रामानुजचार्य, माधवाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी हरिप्रसाद, सरलादास, शंकरदेव, अंदाल ज्ञानेश्वर, नामदेव, रविदास, रामानन्द, नरसिंह मेहता, कबीर, गुरुनानक, गुरु अर्जुन देव, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, एकनाथ, तुकाराम, गार्गी, स्वामी नारायण, दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरबिन्दो, स्वामी रामतीरथ, परमहंस योगानन्द, स्वामी प्रभुपाद** आदि का महत्वपूर्ण योगदान है तथा ये भारतीय संस्कृति की व्यापक समझ के स्रोत हैं।

भारतीय संस्कृति के बारे में भ्रामक तथ्य और तथ्यात्मक स्थिति

यह सर्वविदित है कि भारत के विचारों और मूल्यों की निर्विवाद सम्पदा को नीचा दिखाने और नकारने के लिए भ्रामक तथ्य रचे गये हैं। ऐसे कुछ भ्रामक तथ्य जिनमें वे तथ्य भी सम्मिलित हैं जिनका अब साक्ष्य द्वारा विरोध किया जा रहा हैः–

भ्रामक तथ्य	**वास्तविक स्थिति**
• भारत का इतिहास केवल 1500 ईसा पूर्व में शुरु हुआ तथा पूर्व अब्राहम युग में भारतीय संस्कृति का कालक्रम एकमात्र कल्पना अथवा परी कहानी है। वैदिक वांग्मय जो किसी भी अन्य मानव रचना से पहले का है, को गुलामों की धुन के रूप में खारिज कर दिया।	• प्रेरित पश्चिमी धारणाओं के विपरीत, खगोलीय, पुरातात्विक और साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर, वैदिक काल से लेकर महाकाव्य काल तक की महान विश्वास प्रणालियों जैसे बौद्ध धर्म और जैन धर्म की अवधि तक की अधिकांश अन्य सभ्यताओं की तुलना में इंडिक कालक्रम की एक सर्वसम्मत कथा सामने आई है। कई साक्ष्यों के आधार पर कई विशेषज्ञों के विचारों की जांच के बाद वैदिक काल से लेकर रामायण, महाभारत, गौतमबुद्ध, महावीर जैन तक विभिन्न मील के पत्थरों के साथ इंडिक कालक्रम के लिए कथा की स्थापना की। (जैसा कि सरोज बाला, नीलेश ओक, श्रीकांत तालागिरी, डॉ. वेदवीर आर्य, कल्याण रमनजी, नागस्वामी, मेघ कल्याण सुंदरम, डॉ. कोएनराड एल्स्ट, डॉ. अलेक्जेंडर सेमेनेंको, इगोर टोनोयान–बेलयेव, जियाकोमों बेनेडेटी, निकोलस कजानास, डॉ. राज वेदम, डेविड फ्राउली आदि द्वारा प्रलेखित किया गया है।) • हाल ही के आनुवंशिक अनुसंधान और पुरातात्विक उत्खनन ने भारतीय सभ्यता की प्राचीनता को पहले के तर्कों से भी अधिक पुरानी स्थापित कर दिया है। हरियाणा में राखीगढ़ी (3500 ईसा पूर्व), कुणाल (6000 ईसा पूर्व) भिर्राहना (8000 ईसा पूर्व), बनवाली (3500 ईसा पूर्व), लुहारदेवा (संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश, 7000 ईसा पूर्व), और नवीनतम सिनौली (उत्तर प्रदेश) में खुदाई से विश्व के सबसे पुराने रथ का पता चला है। इसके अतिरिक्त शिवगलाई, तमिलनाडु–दक्षिण भारत में 3345 ईसा पूर्व में लौह संस्कृति के अस्तित्व को साबित करता है तथा भारत और विश्व में अनेकों साइटें कालक्रम पर झूठी कथाओं को गलत साबित करती है।
• भारत का इतिहास केवल 1500 ईसा पूर्व में शुरु हुआ तथा पूर्व अब्राहम युग में भारतीय संस्कृति का कालक्रम एकमात्र कल्पना अथवा परी कहानी है। वैदिक वांग्मय जो किसी भी अन्य	• यह उस ढाँचें में उनके निर्विवाद ऐतिहासिक मूल्य को नकारता है जिसमें सभी साहित्य को ज्ञान के रूपों का दृष्टान्त उदाहरण माना जाता है। • श्री राम संस्कृति शोध संस्थान न्यास द्वारा प्रकाशित 'इन द फुटस्टेप्स ऑफ श्री राम', 'ज्योग्राफी ऑफ रामायण' श्री जिजीथ नादुमुरी रवि द्वारा लिखित, 'रामायण अनटोल्ड बाई साइन्टिफिक एवीडेन्स' सुश्री सरोजबाला द्वारा लिखित तथा

मानव रचना से पहले का है, को गुलामों की धुन के रूप में खारिज कर दिया।	'ग्लोबल फुटप्रिन्ट्सि ऑफ रामायण' श्री आदित्य सत्संगी (यूएसए) द्वारा लिखित और कई अन्य ने इस दावे को खारित करने के लिए भू–कालानुक्रमिक और खगोलीय साक्ष्य प्रदान किये हैं।
• कालक्रम के अनुसार भारतीय सभ्यता, सुमेरियन, मेसोपोटामिया, मिस्र की सभ्यताओं की तुलना में बाद में आयी है।	• वास्तव में सनातन शाश्वत धर्म साहित्यिक, आनुवंशिक और स्रोतों के आधार पर स्पष्ट रूप से दुनिया की अन्य सभी आस्था एवं प्रणालियों से भी पहले की है। अन्य वैश्विक सभ्यताओं की तुलना में भारत का कालक्रम वेदवीर आर्य द्वारा स्थापित किया गया है जिस पर दुनिया भर में और अधिक गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है।
• आर्य, तथाकथित गैर–मूल निवासी, जो भारत आये थे, को भारतीय संस्कृति का पूर्वज बताया गया।	• आर्य प्रवास के सिद्धान्त को कई विश्वसनीय लेखकों द्वारा कई साक्ष्यों के आधार पर खारिज कर दिया गया है। वास्तव में तथ्यों के आधार पर रिवर्श माइग्रेशन सिद्धान्त अधिक मान्य है।
• पुराणों जैसे अत्यधिक संरचित मौखिक ग्रन्थ को 'मिथक' कहकर खारिज करना।	• यह अस्थिर है क्योंकि यह निरंतर, संचयी मौखिक ज्ञान ग्रन्थों की प्रकृति को समझने में असमर्थता और इस ज्ञान की अनुपस्थिति से उत्पन्न होता है कि मूल 'मिथक' का अर्थ 'निर्माण' है और गलत/असत्य नहीं है।
• भारत की वर्तमान राजनीतिक सीमा वास्तव में भारत की सांस्कृतिक सीमा है तथा भारतीय संस्कृति का सार्वभौमिक आधार एक मिथक है।	• भारतीय सनातन सभ्यता की काफी लम्बे समय से सार्वभौमिक उपस्थिति थी और आज भी है जिसके प्रमाण चीन, ब्रिटेन, अमेरिका, आयरलैण्ड, मिस्र, वियतनाम, थाईलैण्ड, मलेशिया, कम्बोडिया, जापान, जर्मनी, रूस, मंगोलिया, ईरान, अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, मैक्सिको, अर्जेन्टीना, अरब आदि जैसे देशों में स्पष्ट रूप से मिलते हैं। **संयुक्त राज्य अमेरिका में ब्रह्मा, विष्णु, महेश शिखरों की उपस्थिति, मिस्र में रामसेस राजवंश, मिस्र में कोम ओम्बो मन्दिर में चरक संहिता और सुश्रुत संहिता, मुस्लिम देश अजरबैजान में कोबुस्तान शहर, आयरलैण्ड में तारा माउण्ड्स, चीन की दीवार पर संस्कृत में शिलालेख, बाकू के ज्वालाजी मन्दिर में संस्कृत और गुरुमुखी में शिलालेख, संस्कृत से आधुनिक भाषाओं का निरन्तर विकास आदि झूठे दावों का खण्डन करने के लिए कुछ उदाहरण हैं।**
• सभ्यता के इतिहास को गलत बताते हुए सरस्वती–सिन्धु सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता का नाम दिया गया।	• हरियाणा के सरस्वती सभ्यता बोर्ड और भारतीय सभ्यता के उद्‌गम स्थल के रूप में सरस्वती नदी का इतिहास, जैसा कि रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर बुलेटिन में राजेश पुरोहित द्वारा प्रस्तुत किया गया है और सरस्वती नदी स्थलों के हालिया सर्वेक्षण और उत्खनन से यह बिना किसी संदेह के स्थापित हो गया है कि सरस्वती सभ्यता हड़प्पा सभ्यता से ईसा पूर्व की है।
• भारतीय सभ्यता को गंगा–यमुना (आर्यन) और नर्मदा–कावेरी (द्रविड) सभ्यता में विभाजित करके भारत को विखंडित भागों में विभाजित करना ही संस्कृति को विघटित करने जैसा है।	• वास्तव में, भारत आंतरिक रूप से एक समरूप इकाई है, जैसा कि मेगस्थनीज, फाह्यान, जुआनजैंग जैसे भारत में प्रतिष्ठित विदेशी यात्रियों ने स्वीकार किया है–एकता में विविधता द्वारा चिन्हित इकाई के साथ। सांस्कृतिक इकाई के रूप में बृहद भारत ने भौगोलिक आयामों को अपनाया जिसमें उत्तर–पूर्व एशिया, मध्य एशिया, ईरान, अफगानिस्तान, राजनीतिक सीमाओं के बिना वर्तमान भौगोलिक भारत, श्रीलंका, म्यांमार, दक्षिण–पूर्व पूर्व एशिया और दक्षिण एशिया शामिल हैं। यह अखण्ड भारत की सांस्कृतिक रूपरेखा है।
• संस्कृत और संस्कृत ज्ञान ग्रन्थ प्रोटो–यूरोपीय कल्पना के उत्पाद थे।	• वैदिक संस्कृत 'प्रोटो इण्डो–यूरोपियन' को मानने का सबसे पुराना भाषाई प्रमाण है। वेद सबसे पुराना इण्डो–यूरोपियन पाठ है जिसमें दुनिया का पहला निरन्तर काव्य और पहला निरन्तर गद्य है। यहां तक कि स्वीकृत कालक्रम वाले पाठ भी दुनिया में सबसे पुराने हैं। उदाहरण के लिए, वेदांग–छह सहायक विज्ञान कई सहस्राब्दी पुराने हैं।
• संस्कृत कभी भी 'बोली जाने वाली' भाषा नहीं थी।	• इससे अधिक अतार्किक बयान नहीं हो सकता। दुनिया का सबसे पुराना और मानव जीवन का एकमात्र स्पष्ट, व्यापक और नियमबद्ध व्याकरण, पाणिनि की 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व अष्टाध्यायी में संधित पर बहुत बड़ा खण्ड है अर्थात् एक शब्द में आसन्न ध्वनियों का आत्मसात और प्रसार।
• हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म पूरी तरह से अलग और स्वतंत्र प्रणालियाँ हैं।	• यहां तक कि वास्तविक पश्चिमी विद्वान भी इस बात से इंकार नहीं करते हैं कि सभी चार प्रणालियों की जड़ें वैदिक वांग्मय में हैं जो उनमें से प्रत्येक के लिए बीज मंत्र (बीच–विचार) प्रदान करती है।
• भारत की दृश्य कला, प्रदर्शन कला, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, चिकित्सा प्रणाली, भाषा साहित्य एवं भाषा	• यह भारतीय ज्ञान सभ्यता के चरित्र की अज्ञानता का ही परिणाम हो सकता है। • वैदिक साहित्य का विशाल भण्डार और यहां तक कि एम.आई.एल. का साहित्य श्रवण–दृश्य और निवार्य रूप से प्रदर्शनात्मक चरित्र का है।

विज्ञान, राज्य और राजनीति, सामाजिक विज्ञान, उद्योग, व्यापार और वाणिज्य, रक्षा, शिक्षा आदि सामान्य धारणा में पश्चिम से प्राप्त उपहार थे।	• दिल्ली में चौथी शताब्दी ई.पू. का लौह स्तम्भ विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारत के अत्यधिक विशिष्ट ज्ञान का एक जीवंत प्रमाण है। • भारत की चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, सिद्ध निर्विवाद रूप से दुनिया में सबसे पुरानी हैं। • भारत ने हाइब्रिड कार्बन स्टील, फ्यूजिंग आयरन का भी आविष्कार किया और कई विदेशी यात्रियों ने भारतीय आयरन, जिंक और कॉपर की गुणवत्ता पर आश्चर्य व्यक्त किया। रायचूर में हट्टी दुनिया की सबसे पुरानी सोने की खदान है जो कम से कम 2 सहस्राब्दी पुरानी है। • वास्तुकला के मामले में भी प्राचीन भारत और इसका प्रभाव क्षेत्र उच्च स्तर की परिष्कार का दावा करता था। अंगकोरवाट का मन्दिर जो अब कम्बोडिया में है, अब तक बनाये गये सबसे बड़े पूजा स्थलों में से एक है जो 3.5 कि.मी. लम्बी दीवार के साथ 163 हैक्टेयर में फैला हुआ है। प्रसिद्ध कांची मन्दिर, तंजावुर मन्दिर, विट्ठल मन्दिर, विद्या शंकर मन्दिर भारतीय वास्तुकला के उदाहरण हैं। मन्दिर वास्तुकला के अन्य चमत्कारों में कोणार्क का सूर्य मन्दिर और एलोरा में नाथ मन्दिर, खजुराहो मन्दिर, पट्टाडकल और मदुरै मन्दिर शामिल हैं। बिहार के केमू जिले में स्थित मुंडेश्वरी मन्दिर दुनिया का सबसे पुराना मन्दिर माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि हिन्दू वास्तुकार बलबाहु ने 12वीं ईस्वी में बीजिंग शहर की योजना बनाई थी। उन्होंने चीन की वास्तुकला पर एक अमिट छाप छोड़ी जहाँ उन्हें अर्निको के नाम से जाना जाता था। • भारत के विशाल पारम्परिक ज्ञान में जल प्रबन्धन और संरक्षण में विशेषज्ञता भी शामिल है। भारतीय उपमहाद्वीप को **सुजलम सुफलाम** – पानी और फलों से भरपूर माना जाता था। दुनिया का पहला ज्ञात बाँध चोल राजा करिकालन द्वारा बनाया गया था। • भारतीय कृषि प्रणालियाँ अल्बर्ट हावर्ड के. एन. एग्रीकल्चरल टेस्टामेन्ट (1940) का आधार बनती है, जो एक मूलभूत कृषि पाठ है। ब्रिटिश टिप्पणीकार भारतीय किसानों द्वारा उपयोग की जाने वाली सरल और वैज्ञानिक विधियों से अचम्भित हो गये थे। जैविक खेती शब्द गढ़े जाने से बहुत पहले, भारतीय किसानों ने अपने स्वयं के जैव कीटनाशक और जैव–उर्वरक बनाए और कृषि कार्यों के लिए बायोडायनामिक कैलेंडर का पालन किया, जिसमें उर्वरता का कोई नुकसान नहीं हुआ और मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाये रखा और जल संसाधनों को संरक्षित किया गया। • संगीत, नृत्य, शिल्प, लोक कला, मेले, त्यौहार के क्षेत्रों में, कई साहित्य और पुरातनता की कहानियाँ अच्छी तरह से प्रलेखित हैं। भारतीय संगीत की उत्पत्ति परम्परागत रूप से वैदिक काल से मानी जाती है। वाल्मिकी रामायण में संगीत का व्यापक रूप से वर्णन किया गया है। वीणा के साथ सरस्वती संगीत की देवी है। संगीत, रंगमंच और नाटक के लिए पहला उपलब्ध शास्त्रीय ग्रन्थ भरत मुनि का नाट्य–शास्त्र है। भरत के बाद राग अस्तित्व में आये और इनका आगमन भारतीय संगीत के इतिहास में नये युग का प्रतीक है। जहाँ तक रंगमंच और नाटक का सम्बन्ध है, वेदों, रामायण, महाभारत में इसका उल्लेख मिलता है। भुवनेश्वर (उड़ीसा) के निकट खंडगिरि गुफाओं में उत्खनन से प्राप्त एक प्राचीन नाट्यशाला दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की है। नाट्य–शास्त्र को नाट्य–वेद या पाँचवें वेद के नाम से भी जाना जाता है। • चित्रकला, चित्रकला और जिसे प्राचीनकाल में वर्णा कहा जाता था, सदियों से विभिन्न संस्कृतियों और पम्पराओं के मिश्रण के माध्यम से भारत में विकसित हुई। भारत में पहले की कलाकृतियाँ प्रागैतिहासिक काल की कच्ची कलाकृतियाँ हैं, विशेषतः मध्य प्रदेश में दस हजार साल पुराने पुरापाषाण भीमबेटका शैल आश्रय जैसे स्थानों में, जिसे 2003 में यूनेस्को विरासत–स्थल के रूप में घोषित किया गया था। भारतीय भित्ति चित्रों की कहानी दूसरी शताब्दी में शुरू होती है। ईसा पूर्व और सबसे प्रसिद्ध महाराष्ट्र में अजंता एलोरा, मध्य प्रदेश में बाघ और तमिलनाडु में पनामालाई और सित्तनवासल हैं। • पल्लव, पाण्डया, चोल, विजयनगर, नायक, मधुबनी (बिहार) में लोक चित्रकला, पट्टचित्रा (उड़ीसा), कलमकारी सहित लघु चित्रकला की सम्पत्ति भी अच्छी तरह

	से प्रलेखित है। • भारतीय नागरिक राजव्यवस्था दुनिया की कई अन्य सभ्यताओं जितनी पुरानी है। भारत में एक सुदीर्घ पाठ्य परम्परा और वैधानिक सोच है, जिसमें ग्राम परिषद से लेकर राजा तक एक संस्थागत प्रणाली सम्मिलित है, जहाँ न्याय पाठ्य कानून (धर्मशास्त्र), सामान्य प्रथा (व्यवहार), सम्मानित लोगों के आचरण (शिष्टाचार) के अनुसार दिया जाता है और इनमें से किसी भी एक या सभी की अनुपस्थिति में, न्यायाधीशों की चेतना के अनुसार लोक स्मृति राजा हरिश्चन्द्र को याद करती है जिन्होंने अपने मृत बेटे के दाह–संस्कार के लिए भी स्थापित विधि का उल्लंघन नहीं किया। • विभिन्न विषयों पर ज्ञान की प्राचीनता का विवरण कई पुस्तकों में संकलित किया गया है जैसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा डीपी चट्टोपाध्याय परियोजना द्वारा संपादित भारतीय सभ्यता में विज्ञान, दर्शन और संस्कृति का इतिहास, सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा मुद्रित एमएस श्रीधरन द्वारा मुद्रित भारतीय विज्ञान मंजूषा प्राचीन भारतीय विज्ञान का कोष, सुरेश सोनी द्वारा भारत की गौरवशाली वैज्ञानिक परंपरा, डॉ शशिबाला द्वारा भारतीय विद्या सार, (रूपा संस्करण) हिन्दू धर्म का विश्वकोष, केंद्रीय सी.बी.एस.ई. द्वारा कक्षा 12वीं और 11वीं के लिए प्रकाशित भारत की ज्ञान परम्पराएं और प्रथाएं संदर्भित हैं।
• भारत सपेरों एवं भिखारियों का देश है और गरीबी से ग्रस्त है।	• पहली शताब्दी में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में भारत का योगदान एक तिहाई से अधिक था। 18वीं शताब्दी में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 25 प्रतिशत योगदान भारत का था (जैसा कि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एंगस मैडिसन ने अपनी पुस्तक '*World Economy: A Millennial Perspective*' में दर्ज किया है)। इसलिए भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था।
• वैश्विक धारणा यह है कि भारत एक राष्ट्र नहीं बल्कि विभाजित सामाजिक– सांस्कृतिक समूह है।	• वैश्विक धारणा यह है कि भारत ने सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों को विभाजित किया है और एक राष्ट्र नहीं है जो इस सच्चाई से वंचित है कि इसकी विशाल बहुलता, विविधता और लोगों, नस्लों और विश्वास प्रणाली की विविधता अनादि काल से एक ऐतिहासिक सत्य रही है (विष्णु पुराण की तुलना करें) और इस बहुलता और विविधता के होते हुए भी भारत सदैव से एकात्मक रहा है (अथर्ववेद भूमि सूक्त) और यह एक एकल अभिन्न एकता है जिसे भारत आने वाले सभी विदेशी यात्रियों ने लम्बे समय से मान्यता दी है और उन्हें कभी संदेह नहीं हुआ कि वे 'भारतवर्ष' में आ रहे हैं।
• आक्रमणकारी इसलामी सेना के सामने हिन्दू बिना किसी प्रतिरोध के युद्ध में पराजित हो गये।	• यह झूठ है, जिस तरह कार्ल मार्क्स ने खुद अपने ''नोट्स ऑन इण्डियन हिस्ट्री' में प्रश्न उठाया है और इस बात पर बल दिया है कि हर इंच भूमि पर लड़ाई लड़ी गई और उसकी रक्षा की गयी। बप्पा रावल (8वीं सदी) से लेकर श्री गुरुगोविन्द सिंह (17वीं–18वीं सदी) तक तथा हिन्दू–शाही, पाल, तोमर और चौहान, शिशोदिया, परमार, प्रतिहार, अहोम (1227 से 1704 तक), वारंगल के काकतीय, विजयनगर के राय, मराठा, भरतपुर के जाट, महाराणा रणजीत सिंह और सिख गुरु और असंख्य योद्धा भारतीय शौर्य परम्परा के श्रेष्ठ प्रतिमान है।
• भारत ने अन्य क्षेत्रों पर सैन्य आक्रमण के माध्यम से अपनी सीमाओं का विस्तार किया तथा इस प्रकार भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ।	• भारतीय संस्कृति का प्रसार ऋषि–मुनि, ज्ञानी गुरुओं द्वारा दुनिया भर में किया गया जिन्होंने व्यापारियों के साथ विभिन्न व्यापार मार्गों पर यात्राएं की। चीनी विद्वान हू शिह की प्रसिद्ध कहावतः ''भारत ने अपनी सीमा के पार एक भी सैनिक भेजे बिना 20 शताब्दियों तक सांस्कृतिक रूप से चीन पर विजय प्राप्त की और उस पर प्रभुत्व बनाये रखा।'' यह भारतीय संस्कृति की शक्ति को दर्शाता है।
• स्वतंत्रता के समय भारत का साक्षरता दर 5 प्रतिशत था	• भारत में एक अच्छी तरह से संरचित शिक्षा प्रणाली थी जो चीन और फारस के छात्रों को आकर्षित करती थी। ऐसा माना जाता है कि विश्व का पहला विश्वविद्यालय आधुनिक पाकिस्तान में स्थित तक्षशिला में 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व में स्थापित किया गया था और यह 455 ई.पू. में नष्ट होने तक 1200 वर्षों तक जीवित रहा। बाद में शिक्षा के अन्य केन्द्रों जैसे नालन्दा, विक्रमशिला, उदयनपुर, सुलोतगी विद्यापीठ, सोमपुर महावीर, रतनगिरि और वल्लभी विश्वविद्यालयों ने दार्शनिकों, गुरुओं, गणितज्ञों, खगोलशास्त्रियों, वैज्ञानिकों, व्यापारियों, कृषकों आदि को तैयार करने में योगदान दिया।
• विदेशी आक्रमणकारी चाहे इस्लामी ताकतों के हों अथवा ब्रिटिश शासन	• जैसा कि विल डुरंट ने सभ्यता के अपने इतिहास में, अध्याय 10 में कहा है, भारत पर मुस्लिम विजय मानव इतिहास का सबसे प्राधिक रक्तरंजित अध्याय

के, उन्होंने भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक– आर्थिक ताने–बाने को समृद्ध किया।	हैं।'' भारत के हिन्दू मन्दिरों और अन्य पूजा स्थलों के मूर्त और अमूर्त विरासत के अपमान और विनाश के प्रलेखन करने की बहुत आवश्यकता है। • तक्षशिला (पाकिस्तान), नालंदा, विक्रमशिला, ओदंतपुरी, तिलढाका (बिहार), सोमपुरी, जगद्दाला (पश्चिम बंगाल) जैसे विश्वविद्यालय और ज्ञान केन्द्र को आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

न्यास द्वारा क्रियान्वयन की प्रक्रिया में प्रारम्भिक डिलिवरेबल्स

1. एकीकृत स्वास्थ्य प्रबन्धन– AAYUSH (एलोपैथिक + आयुष) का एक मॉडल विकसित करना जैसे आयुर्वेद, योग, मर्म चिकित्सा, प्रणायाम तथा मध्यस्थता, कलारी, सिद्ध, आहार और पोषण, पंचकर्म, संगीत थेरेपी और नृत्य (जीवनशैली), होम थेरेपी, एस्ट्रो थेरेपी, आध्यात्मिक विज्ञान, सामाजिक अभ्यास (जप, तप, अर्चना, व्रत, अनुष्ठान), नेवल और उवुला सुधार, दर्द प्रबन्धन, औषधीय पौधे एवं जड़ी–बूटियाँ।
2. जन–जन तक भारतीय ज्ञान का एकत्रीकरण और प्रसार
   - भारतीय विकिपीडिया (भारतीय परम्परा का ज्ञान कोष)
   - भारतीय एलेक्सा
   - भारतीय क्लाउड
3. हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म भारत के दक्षिण से सम्बन्धित महाकाव्य अर्थात संगम साहित्य आदि से सम्बन्धित बहुआयामी ज्ञान एकत्र करना, विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों के सहयोग से मूल लिपियों (संस्कृत, पाली, प्राकृत, तमिल, गुरुमुखी आदि) पर आधारित पारसी धर्म और ज्ञान को उपभोज्य प्रारूप/श्रुति परम्परा में परिवर्तित करना और सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा जन–जन तक प्रसारित करना।
4. विदेशी उद्यमियों की पहचानना तथा उन्हें प्रोत्साहित करनाः दुनिया के कई हिस्सों में खोले जा रहे चीनी केन्द्रों की भांति विदेश मंत्रालय के माध्यम से प्रवासी भारतीय मिशनों को वैश्विक भारतविदों और वैश्विक प्रवासियों के साथ जोड़ना।
5. मानसिकता में बदलाव लानाः कार्यशालाओं का आयोजन करके नौकरशाही, कूटनीति, शिक्षा, राजनीति, मीडिया, न्यायपालिका, कानून और व्यवस्था तथा रक्षा की मानसिकता और धारणा में बदलाव की प्रक्रिया शुरु करना।
6. भारत के प्रत्येक जिले और धीरे–धीरे दुनिया के बड़े–बड़े शहरों में भारतीय संस्कृति पार्क स्थापित करने में मदद करना।
7. ग्रामीण अर्थव्यवस्था की उन्नति के लिए शिक्षा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, मेलों और त्यौहारों आदि को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण स्तर पर मन्दिरों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की पुरानी प्रथाओं के पुनरुद्धार के लिए एक मॉडल कार्यक्रम शुरू करना।
8. भारतीय संस्कृति में निहित नए शहरी परिदृश्य की संकल्पना।
9. स्वास्थ्य एवं संस्कृति उन्मुख पर्यटन को बढ़ावा देना।
10. मन्दिरों में कथा और प्रवचनों का समर्थन करके श्रुति परम्परा को फिर से जागृत करना।
11. संस्कृत शास्त्रों के खोए हुए खजाने का पता लगाना।
12. भारतीय ज्ञान एवं अनुशासन का प्रतिपादन।
13. जैविक खेती और प्राकृतिक उर्वरकों की मॉडलिंग
14. विभिन्न एम.आई.एल. लिपियों में मौलिक बौद्धिक पाठ उपलब्ध कराना।
15. प्राचीन वस्तुओं, स्मारकों, खण्डहरों और स्थलों की सुरक्षा के लिए एक उचित नीति बनाना– मूर्त सांस्कृतिक ऐतिहासिक विरासत।
16. ब्रिटिश न्यायशास्त्र के बजाय वैदिक न्यायशास्त्र का उपयोग करके न्यायपालिका के साथ लम्बित 5 करोड़ से अधिक विवादों और राजस्व तथा पुलिस के साथ लगभग 5 करोड़ मामलों को हल करने का मंच।

17. भारतीय संस्कृति की रक्षा के हित के लिए हानिकारक विभिन्न कानूनों, अधिनियमों, संवैधानिक प्रावधानों में संशोधन जैसे क्षेत्रों के लिए एक एन.जी.ओ. के रूप में विभिन्न नीतिगत पहल करना।

18. श्रीकृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति, काशी विश्वनाथ मन्दिर, स्मारकों की सुरक्षा, 800 ईस्वी से 1947 तक सनातन धर्म पर आक्रमण की याद दिलाने वाले शहरों और सड़कों के नामकरण जैसे जीवन्त मुद्दों के समाधान के लिए विभिन्न हितधारकों से जुड़ना।

कार्यान्वयन के लिए रोडमैप

कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया में हैः—

(क) वेबसाइट का बनाना।

(ख) न्यास के द्वारा चिन्हित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न वर्टीकल्स के विशेषज्ञों का चिन्हीकरण।

(ग) एन.सी.आर. क्षेत्र में किसी निजी विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति वैश्विक केन्द्र की स्थापना।

(घ) जनसामान्य की जानकारी लाने के लिए मीडिया/सोशल मीडिया की योजना।

(ड.) 60 से 80 वर्ष की आयु के सेवानिवृत्त व्यक्तियों को अनुभवी व्यक्तियों के रूप में चिन्हित करके न्यास के माध्यम से राष्ट्र को योगदान देने हेतु प्रोत्साहन की योजना।

(च) केन्द्र सरकार के समर्थन के लिए संस्कृति/विदेश मंत्रालय/शिक्षा/आयुष/स्वास्थ्य/ कानून/सूचना और प्रसारण/रेलवे/भूतल परिवहन आदि मंत्रालयों के साथ वार्ता तथा विभिन्न संस्थाओं जैसे कि IGNCA, ICHR, NCERT, UGC, ICCR आदि संस्थाओं से संवाद स्थापित करना।

(छ) विभिन्न राज्य सरकारों से संवाद स्थापित करते हुए न्यास के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सहयोग प्राप्त करना।

(ज) औद्योगिक समुदाय से वार्ता करके सनातन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स की स्थापना की संभावना को तलाशना।

(झ) भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न धर्मगुरुओं जैसे कि हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिख एवं साधु—संतों से वार्ता कर संरक्षक मण्डल में शामिल होने का अनुरोध।

संयोजक— भारतीय संस्कृति वैश्विक न्यास

दीपक सिंघल
आई.ए.एस. (से.नि.)
पूर्व मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार
Mobile: 9818651333
E-mail: deepaksinghalias@gmail.com